चलता पहाड़
एक दिन एक ऊँट रेत कि आँधी में दब जाता है और सिर्फ उसके कूबड़ बाहर रहते हैं। दो कछुए कूबड़ को पहाड़ समझ कर उस पर चढ़ जाते हैं। लेकिन जब ऊँट चलने लगता है तो कछुए हैरान रह जाते हैं। इसी तरह जब ऊँट को गलती से सभी पहाड़ समझने लगते हैं, तो वह सोचने लगता है कि पहाड़ क्या होता है?
One day, a camel is buried by a sand storm until only his humps are visible. Two turtles climb on the humps, thinking they are mountains. But when the humps start walking, the turtles are surprised to discover what is underneath! After the camel is mistaken for a mountain several times, he wonders, what is a mountain anyway?
Room to Read®
World Change Starts with Educated Children.®
ISBN 978-93-84697-91-4
कहानीः मनोहर चमोली
चित्रः जितेंद्र ठाकुर

चलता पहाड़

The Walking Mountain

IN-LLP-16-0006
Fourth Edition.
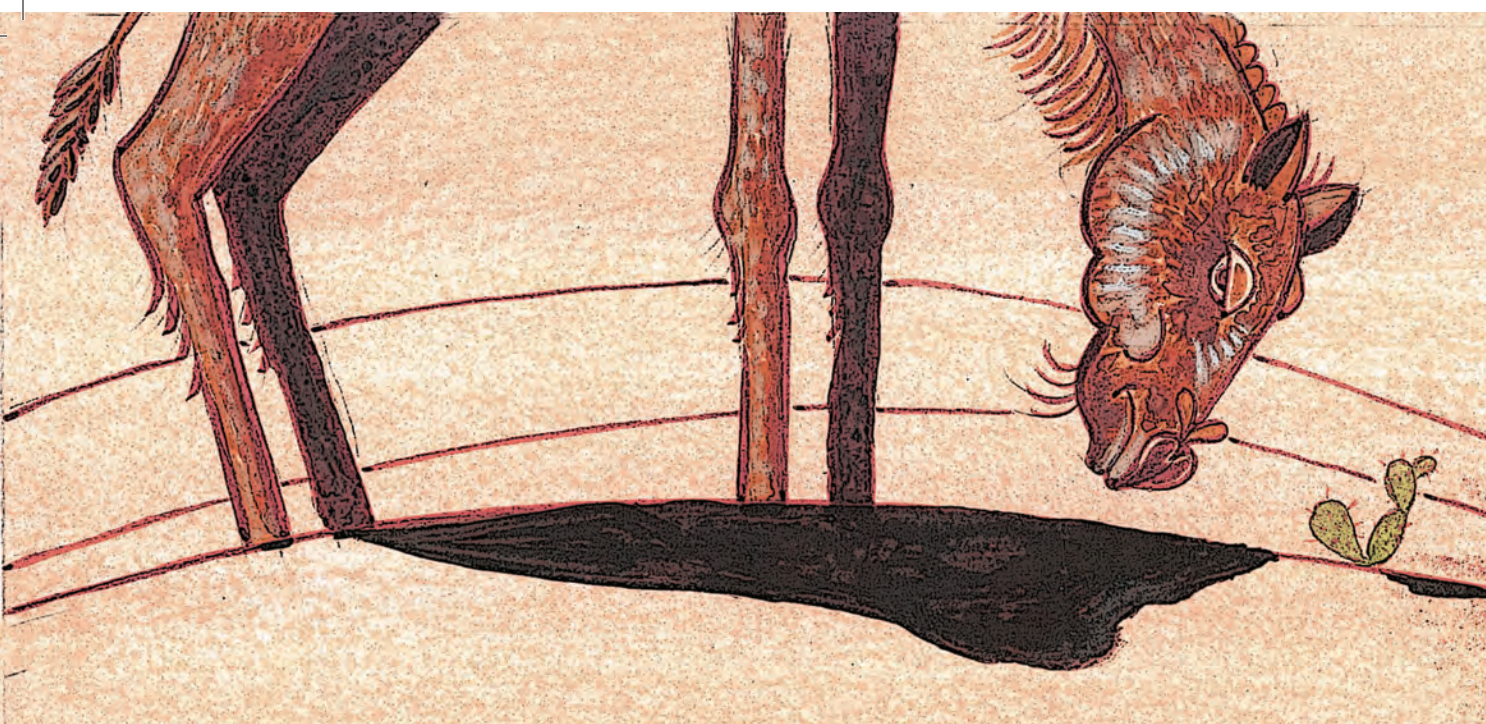
रूम टू रीड, साक्षरता और शिक्षा में लैंगिक समानता को केंद्र में रख कर विकासशील देशों के लाखों बच्चों की ज़िंदगियों में बदलाव के लिए प्रयासरत है। हम स्थानीय समुदायों, सहयोगी संस्थाओं और सरकारों के साथ मिलकर प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में साक्षरता कौशल और पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए काम करते हैं तथा बालिकाओं को माध्यमिक शिक्षा पूरी करने में, जीवन कौशलों को विकसित करते हुए, मदद करते हैं। ताकि वे आगे की पढ़ाई जारी रख सकें और जीवन में सफल हो सकें।

Room to Read seeks to transform the lives of millions of children in developing countries by focusing on literacy and gender equality in education. Working in collaboration with local communities, partner organizations and governments, we develope literacy skills and a habit of reading among primary school children, and support girls to complete secondary school with the relevant life skills to succeed in school and beyond.

Room to Read India Trust,
Office No. 201E (B), 2nd floor, D-21
Corporate Park, Sector-21, Dwarka,
New Delhi-110075

चलता पहाड़

एक था ऊँट। सबसे बड़ा।
दो कूबड़ वाला।
बड़ा था, इसलिए इतराता था।
अलग-थलग रहता था।

एक दिन जोर की आँधी आई।
खूब मिट्टी उड़ी।

ऊँट सोता रहा।
उसके चारों ओर मिट्टी जम गई।
पर कूबड़ बाहर थे।

दो कछुए वहाँ पहुँचे। वे
कूबड़ को पहाड़ समझ बैठे।
वे लगे चढ़ने-उतरने।
उन्हें मजा जो आ रहा था।

तभी ऊँट की नींद खुली।
वह हिला-डुला और उठा।

कछुए झट से
कूदे। बोले-
भागो, पहाड़
तो चल रहा है।
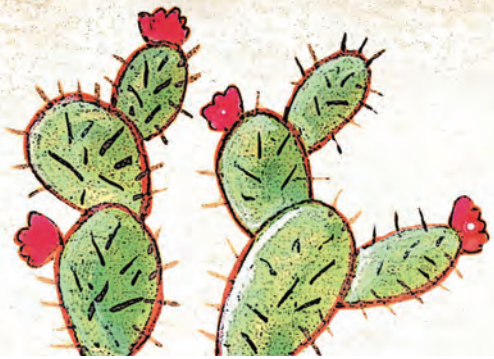
ऊँट सोचने लगा,
पहाड़ क्या होता है।

एक दिन बहुत गरमी थी।
ऊँट जा बैठा पानी में।
पर कूबड़ बाहर थे।
दो मेंढक आए।
वे कूबड़ को पहाड़
समझ बैठे।

शाम हुई, ऊँट उठा।
मेंढक झट से कूदे।
बोले- भागो, पहाड़
तो चल रहा है।
ऊँट सोचने लगा,
सब उसे पहाड़
क्यों बोल रहे हैं!

वह चल दिया पहाड़ ढूँढ़ने...

जंगल पार किया...
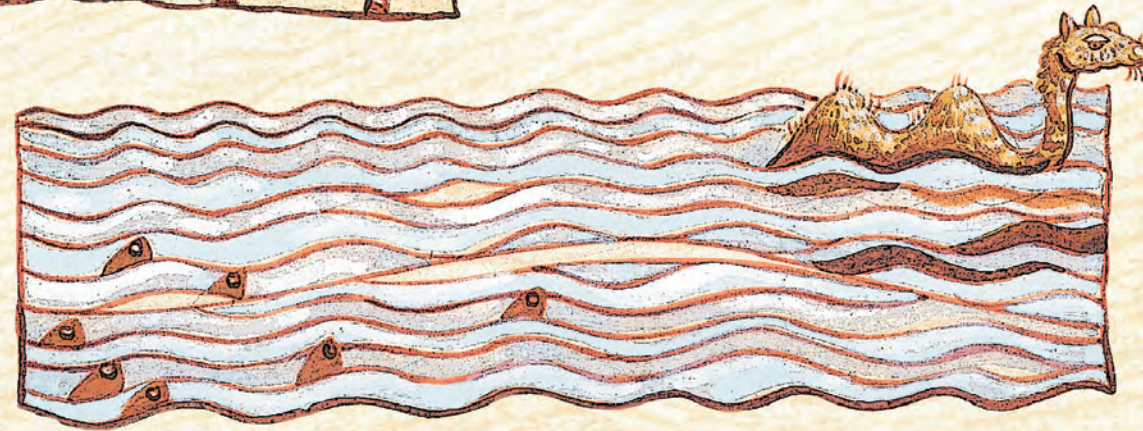
नदी पार की...

मैदान पार किया।

चलते-चलते रात हो गई। वह थककर सो गया। रात को बरफ गिरी।
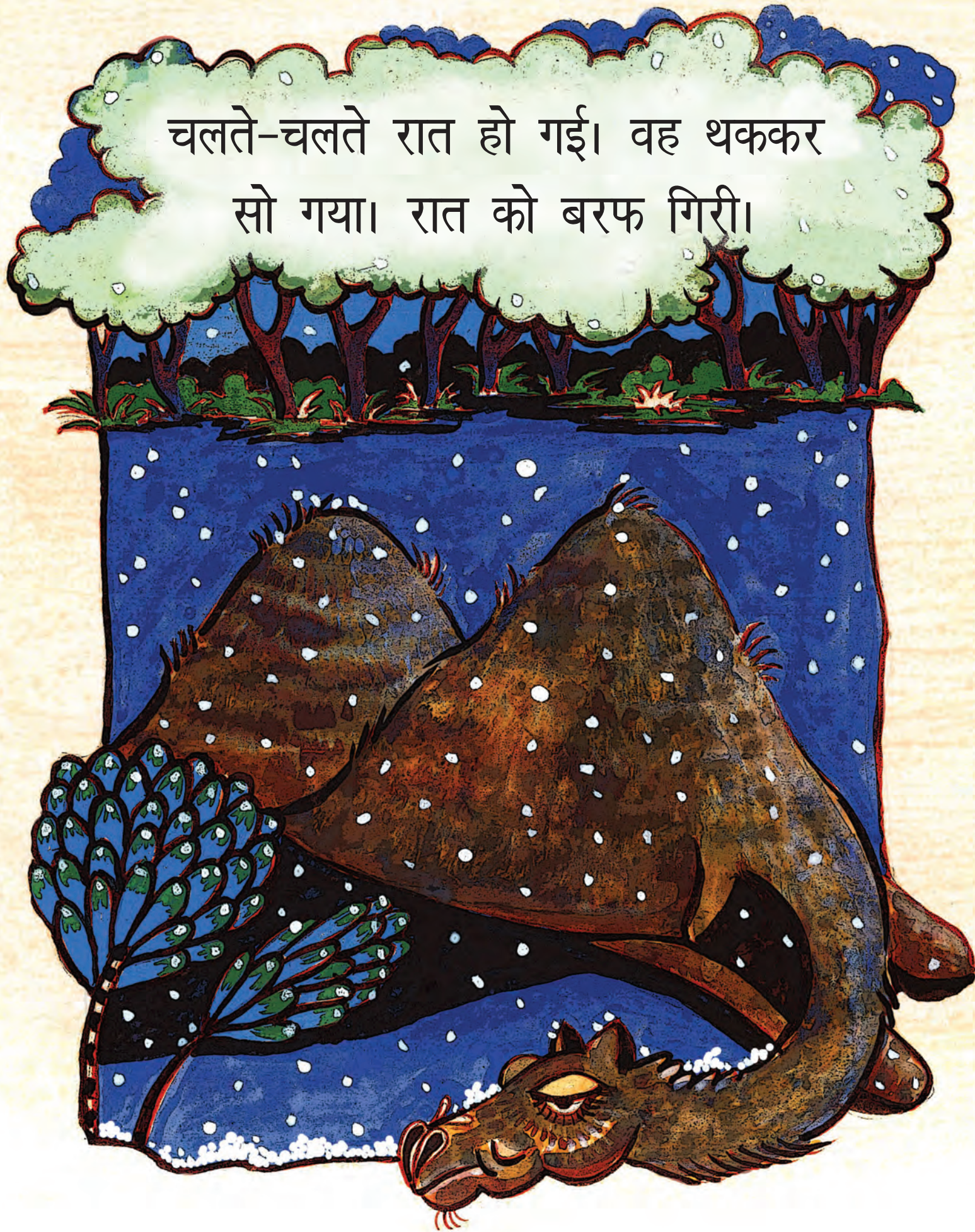
सुबह हुई तो चारों ओर बरफ थी। पर कूबड़ बाहर थे।

दो चूहे वहाँ पहुँचे।
वे कूबड़ को पहाड़ समझ बैठे।
लगे उतरने-चढ़ने।
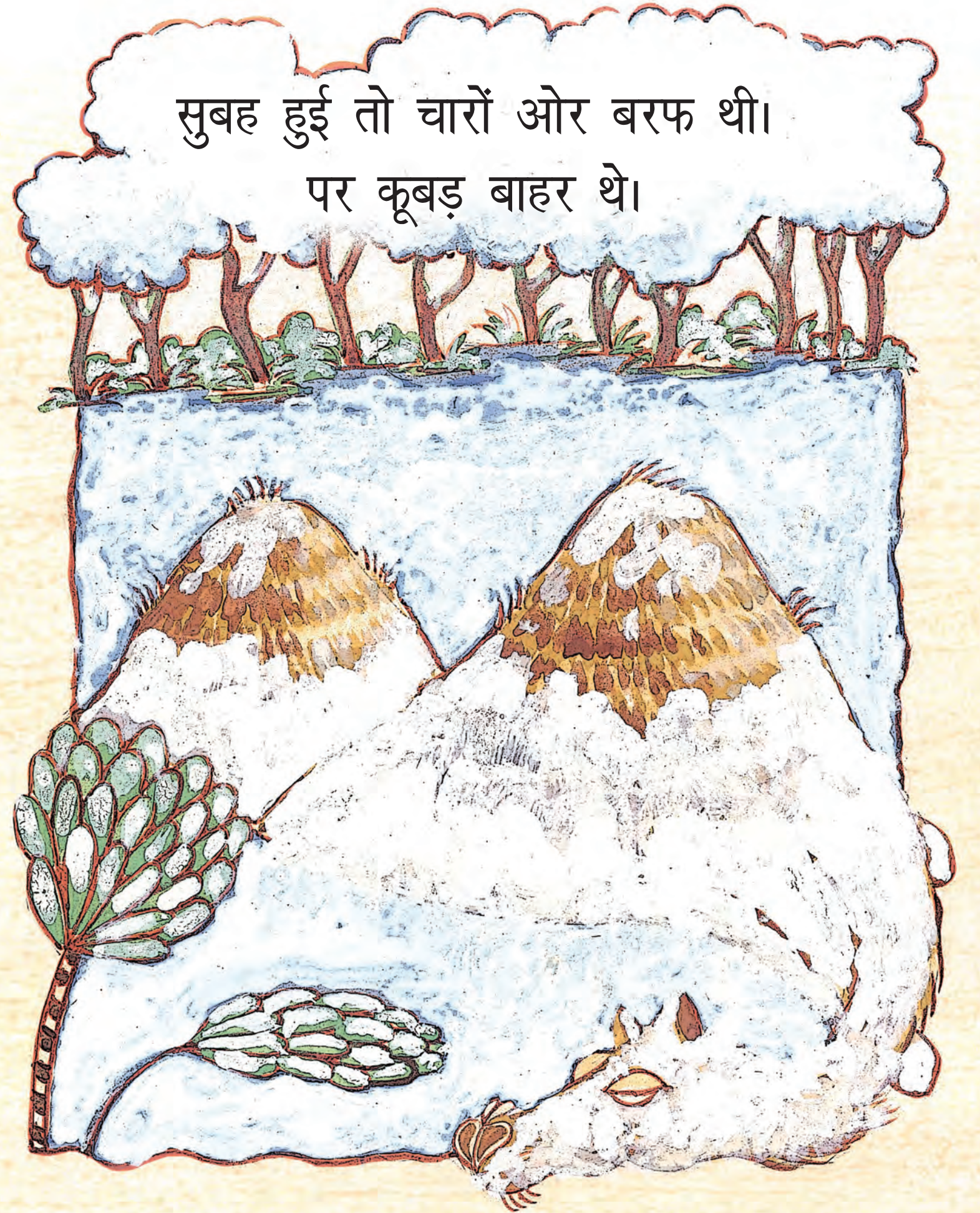
ऊँट की नींद खुली।
वह उठा। चूहे झट से कूदे।
बोले- भागो, पहाड़ तो चल रहा है।

तभी ऊँट की नजर
सामने पहाड़ पर पड़ी।
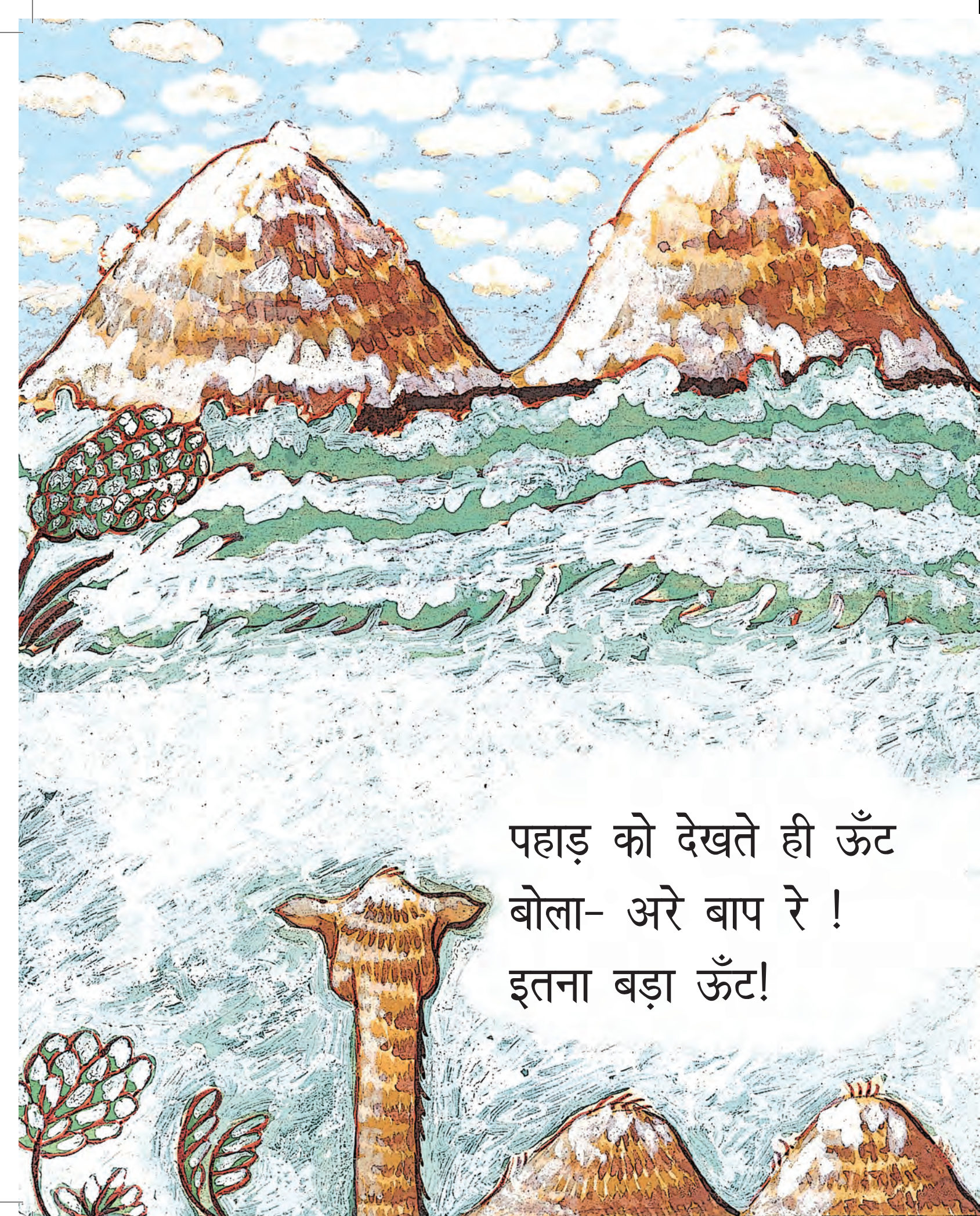
पहाड़ को देखते ही ऊँट
बोला- अरे बाप रे !
इतना बड़ा ऊँट!

प्रकाशकः रूम टू रीड इंडिया
Publisher: Room to Read India

भाषाः हिंदी
Language: Hindi

संस्करणः चौथा, 30,000 प्रतियाँ
Edition: Fourth, 30,000 Copies

लेखक के बारे में

मनोहर चमोली "मनु" का जन्म टिहरी, उत्तराखंड में हुआ। इन्हें पत्रकारिता और कानून में शिक्षा मिली है और अभी भाषा शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। पढ़ने लिखने में इनका मन रमता है और इनकी लिखी कहानी, कविताएँ और नाटक कई जगहों पर प्रकाशित हो चुकी हैं। *अंतरिक्ष के आगे बचपन* और *जीवन में बचपन* के अलावा 20 से ज्यादा कहानियाँ मराठी में भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

About the Author

Manohar Chamoli "Manu" was born in Tihri, Uttrakhand. He received an education in journalism and law and currently works as a teacher of language. He is a prolific writer who has published many articles, books, poems, and plays for both children and adults. His books include *Antriksh Ke Aage Bachpan* and *Jiwan Mein Bachpan*, and more than twenty of his stories have been translated and published in Marathi.

चित्रकार के बारे में

जितेंद्र ठाकुर प्रतिभाशाली युवा चित्रकार हैं। इन्हें बच्चों के लिए चित्र बनाना अच्छा लगता है। जितेंद्र ने बच्चों की अनेक किताबों के लिए चित्र बनाए हैं। इन्हें प्रतिष्ठित सेकंड नेमी आइलैंड इंटरनेशनल पिक्चर बुक इलस्ट्रेशन कॉनकोर्स, 2015 में प्रोत्साहन पुरस्कार मिला।

About the Illustrator

Jitendra Thakur loves to paint for children and has illustrated several picture books. He received the encouragement prize at the 2015 Nami Island International Picture Book Illustration Concours.